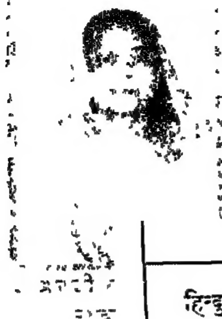
(भोजपुरी के नौ गीत)



कवि



भोजपुरी गर आसर [illegible] ई भोजपुरी
[illegible] मि किर [illegible] भोजपुरी अंचल
में [illegible] ई [illegible] से आज ले
[illegible] गोदर [illegible] ।



कवि • बृजमोहन श्रीवास्तव 'चंचल'

अँजुरी भर आखर

(भोजपुरी के नौ गीत)

कवि

बृजमोहन श्रीवास्तव 'चंचल'

प्रकाशक

चंचल प्रकाशन

२-ढिंगवस कोठी, अलोपीबाग,

इलाहाबाद -२११००६ (उ०प्र०)

फोन : ५०३७४५

मुद्रक

नागरी प्रेस : आफसेट प्रिंटर्स

११/१८६, अलोपीबाग, इलाहाबाद-२११००६

फोन : ५०२१३५

प्रथम संस्करण

१४ सितम्बर, १९९९ दाम : रुपैया बीस

फरहरा

आपुन बात	...	३-४
मुखबंध	...	५-७
नीर-छीर	...	८-१०
साधुवाद	...	११
आसीस	...	१२-१३

क्रम	कवित्त		पन्ना
१.	जुग के पुकार	...	१४-१५
२.	बबुआ के नाँव पाती	...	१६-१७
३.	देसगान	...	१८-१९
४.	चल चलीं श्रमदान करींजा	...	२०-२१
५.	गाजीपुर गुलजार हो गइल	...	२२-२३
६.	किसान के हुलास	...	२४-२५
७.	हमार गाँव	...	२६-२८
८.	गाँव-घर	...	२९-३०
९.	गाँव के जिनगी	...	३१-३२

आपुन बात

सन् १९५१ मे गहमर हायर सेकेन्डरी स्कूल से हाई स्कूल पास कइला के बाद अपना गॉव बारा से कलक्टरी कचहरी गाजीपुर मे नौकरी करे अइली। एहिजे जिला सूचना अधिकारी श्री जयश्री सिंह से भेट भइल। ई साहित्यिक आदमी रहँ। इनका इहां साहित्यिक बैठकी खूब होखे। ओहि मे हमहूं शामिल हो गइली। एहिजे से हमरा कविता के ककहरा शुरू भइल। जिला नियोजन कार्यालय, गाजीपुर से ओह समय एगो पत्रिका 'प्रकाश' नॉव से छपत रहे। ओहि मे हमार कुछ छिटपुट भोजपुरी के रचना छपल। भोजपुरी के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य अउर गम्भीर-भाव के रचना भी गढ़े लगली। रचना सुनिके सुनवइया लोग जब थपोड़ी बजावे त हमके बड़ा नीक लागे। फिर त एही मे पँवरे लगली। एकरा बाद त शुरू हो गइल कविता के लिखाइ। नौकरी के चक्कर मे गाजीपुर जिला छूट गइल। भटके लगली यू० पी० के एह से ओह जिला मे। एही उलट-फेर मे भोजपुरी के कविता भट्टक गइल। गम्भीर-भाव के कविता जरूर लिखिला, बाकिर हास्य-व्यग्य के जुआठि भाई लोगन हमरा कॉध पर रखिके टिटकार देहिलन त हम एहि विधा में साहित्य के खेत जोते लगली अउर एक से एक बढिया रचना के निमन फसल उगावे लगली।

हमरा कविता के पुस्तक छपे के चाही, एह पर बहुत लोग के जोर पड़े लागल अउर हम नाही-नुकुर करत रहीं। इहे मन मे बिचार उठे कि हम कवनो महाकवि सत तुलसीदास बाबा त हई ना, के पढी-पूछी हमरा पोथा-पोथी के। फिर विचार बदलल कि पोथा ना छपी त हमके लोग इहे समझी की पइसा-रुपैया बचावे खातिर ई पुस्तक ना छपवलन ह। एहतरे लोक-लाज का आगे एकाएकी बिचार बदल गइल। कविता के बंडल खोलला पर हास्य-व्यंग्य,

गम्भीर-भाव के रचना के साथ भोजपुरी के भी नौ रचना मिलल। एहि तीनो विधा के अलग-अलग किताब छपवावे के मन बन गइल बा। भोजपुरी के मात्र नौ रचना कुछ अरथ नइखे राखत, बाकिर हम सबसे पहिले एही के छपवा के सिरी गेनस कइली ह। ई पुस्तक छपला के बाद कुछ छपाई के गियान भी हासिल हो जाइ।

'अँजुरी भर आखर' एह पोथी मे का कुछ बा, ई त पढवइया अउर भोजपुरी भाषा के माहिर लोग जाने, बाकिर हम अपना धरम-करम से उतरीन भइली, एकर हमरा बडा संतोख बा। ई सेवरी के बइर अगर इचिको खटतुरस लागे त एके भोजपुरी बिरिछ के फल समझि के हमरा के रउवा सभे बक्स देइब जा। एह पोथी का बारे मे रउवा सभे के खरा-खरा विचार के हम स्वागत करब। हमके लिखे मे रउवा सभे इचिको संकोच मत करब, विनती अउर चिरउरी बाटे इहे रउवा सभ से।

आखिर मे हम डॉ० (श्रीमती) शारदा पाण्डेय, श्री विजयानंद तिवारी (सम्पादक -'जगरम'), श्री ईश्वर चन्द्र सिन्हा (वरिष्ठ पत्रकार आ उपाध्यक्ष-भोजपुरी संसद), श्रीयुत रमादत्त शुक्ल (सम्पादक-'सम्पादक की वाणी' कौल-कल्पतरु चण्डी) अउर भुलाइल-भटकल अपना सभे गोइयाँ लोगन के हिरदय से आभारी बाड़ी, जेकरा आसीस अउर साधुवाद के बलबूता पर ई पोथी एगो आकार पवलसि।

इलाहाबाद (प्रयाग)
१४ सितम्बर, १९९९

विनयावनत,
● बृजमोहन श्रीवास्तव 'चंचल'
२-ढिंगवस कोठी, अलोपीबाग,
इलाहाबाद-२११००६ (उ०प्र०)

मुखबंध

धरती के हर खण्ड आपन एगो विशेष रस-गंध के पहिचान राखेला ऊहे ओकर संस्कृति-संस्कार के भाषा कहाले। भारत माता के एह श्रृंगारित आँचर के एगो विशेष सुवासित-फूल ह पुरवैया के झोका से झूमत-लहरात, गीत के लय-ताल से सराबोर भोजपुरी। जवन भाषा के रूप मे मधुरतम भाषा कहाले, संस्कृति के रूप में वीरोपासना के रूप पावेले,भाव के रूप मे आत्मीयता के मधुकोष ह त काव्य के रूप मे आ गीत के रूप मे एह धरती के राग से रँगल मन-प्राण के उमंगित क देबे वाली अमृता वाणी के संज्ञा पावेले। जहाँ आइ के व्यक्ति आ प्रकृति, गाँव आ नगर कुल्ही मे एगो विशेष तादात्म्य उभरि आवेला, पूर्वांचली धरती के सुवास आत्मा के आत्म भाव से जोड़े के साधन आ भाव आत्मानन्द के साक्षी बनि जाला। **'अँजुरी भर आखर'** एही सांस्कृतिक संचेतना के तरंग से भरल, देश के कण-कण के रस से धनी **श्री बृजमोहन श्रीवास्तव 'चंचल'** के भावात्मक समर्पण के प्रतीक बा।

कहल जाला कि जीवन लमहर मत होखो बाकिर जीवन के आह्लादिनी शक्ति लमहर होखो एही भाव के प्रमाण आ प्रभाव एह तन्वी रचना के संगे सँपुष्ट बा। कुल 'नौ' गो भोजपुरी कविता के सूक्ष्म कलेवर मे कवि पूरा देश के आत्मा के सतरंगी इन्द्रधनुषी प्रभाव मूर्तित क देले बा। **'जुग के पुकार'** मे कृषि प्रधान भारत देश के कर्णधार किसान के आत्मबल के प्रोत्साहन आ आत्मिक उछाह के भाषा टकसाली मुहावरेदार तेवर में अभिव्यक्ति पवले बा, **'बबुआ के नाँव पाती'** मे युवा वर्ग के शक्ति के जागरण आ भावना के प्रयास बा। **'मुँह प सूरज के लव/माथे रजनीश नव'** मौलिक उद्‌भावना के साथ-साथ कवि के दृष्टि युवा वर्ग के निश्चित लक्ष्य की ओर प्रकाश संधान के संदर्भ मे भी विशेष रूप से ध्यान देबे के योग्य बा। कवि-

मन बेर-बेर ओह तट आ किनारा की ओर ताकता जहाँ से ओकरा वाणी के ललकार नदी के हर लहर के छू के सिहरा देउ। **'देसगान'** के मूल स्वर विशाल भारत के सगुण रूप मे एगो 'कैनवास' पर उतार देबे के, अखण्ड भारत के विराट रूप के सकल्पना के प्रत्यक्ष संदर्शन बा ऊ बेर-बेर संश्लेषक भारतीय संस्कृति के रूप-दर्शन करावता। कवनो अंचल आ ओकर क्षेत्रीय विन्दु अदृश्य नइखे। **'चल चलीं श्रमदान करींजा'** नेताई संस्कृति-संस्कार मे जम के धुनाई करे वाला गीत बा। जइसे एकर हर अक्षर एगो चिउँटी काटता आज के नेता आ अधिकारी के औपचारिक कल्चर के। एही क्रम मे **'गाजीपुर गुलजार हो गइल'** अपना देश के अफवाह के जुगाली से रससिद्धि करे वाला मनोवृत्ति पर बडा करारा व्यग्य बा। **'अखबारन के बात जनि पूछ'** से अंतिम चरण तक एह वृत्ति के सरल-सहज आ सरस प्रवाह मन के बाँध लेता। बाकिर एह हास-व्यंग्य के हँसिया के ऊपर कवि के आत्मरति मूल रूप से अपना गाँव घर-सिवान-खेत-खरिहान, गदराइल महुआ के जीवन रस के सिंचित धरती में समाहित बा। एही से कवि जइसे हर भाव के डार से उडत-उड़त आइ के फेरु अपना गाँव-घर के खोता मे बेलमि जाता। ओकरा आँखि मे गाँव के जीवन हरिअरी मे रंगाइल, मदइलगंध मे सउनाइल, चना-चबेना आ भेलीगुड के मिठास में पगाइ के बेर-बेर झूमे लागता। अइसन प्रीति के रसधार 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' के मानक विन्दु पर लहराइ जातिया। एही से बुला कतो एह कवि के **'राष्ट्र-कवि'** के संज्ञा से अभिधानित कइल बा। कवन पूर्वांचली जन होई जेकरा के ई भाव ना हिलोरत होई–

'नदी किनारे गाँव बसंती / गोंइड़े महुआबारी,
पोखर डूबे, नहर लबालब/खेत भइल सुखकारी।'...

गाँव के हर घर आपन, हर व्यक्ति संबंधी होला। ओजू नगरी परायापन के भाव ना पनपे। नेतन के भाषण के एकता के नारा एजू

हर व्यक्ति अपने आप के व्यवहार मे जीएला—

'एके कुइयाँ के नीर सवीकार करिला।' मे एकर प्रत्यक्ष प्रमाण पावल जा सकेला।

अइसन बुझाता कि कवि गागर मे सागर भरे के कला मे त सिद्धहस्त बडले बा साथे 'खारापन' के दुर्गुण कतो नइखे आवे देले, 'मिठास' के रस आ सद्भाव के एकात्म सघन गहराई के अइसन पतवार ले ले बा कि पाठक आनन्द के अविकल अनुभूति प्रतिक्षण करत चलता।

भाषा सरल, सहज, गीति शैली, स्वर सधल, सांगीतिक सामञ्जस्य एह कुल्ही तत्त्व के चलत आ अपना कथ्य के मर्मिकता-सर्वग्राहता के भाव से समन्वित भइला के कारण ई रचना आपन पाठक का बनावे मे स्वतः समर्थ बा। अइसन सुन्दर कृति से भोजपुरी साहित्य के समृद्ध करे खातिर **श्री 'चंचल' जी** बधाई के पात्र बानी। ईहाँ के यशस्वी सारस्वतदान के निरंतरता के शुभकामना सहित—

इलाहाबाद (प्रयाग)
२९ अगस्त, १९९९

● डॉ० (श्रीमती) शारदा पाण्डेय
१४२-बाघम्बरी गृह योजना,
भारद्वाजपुरम्, इलाहाबाद-६

नीर-छीर

माटी के रस-गंध से सराबोर **'अँजुरी भर आखर'**- ई गीत-संग्रह **श्री बृजमोहन श्रीवास्तव 'चंचल' जी,** हिन्दी-उर्दू कवि सम्मेलन खातिर एगो जानल-पहचानल आ औघड़ हस्ताक्षर बाड़े। हास्य मे पगल उनकर बेधक व्यंग्य श्रोता मे होहकार मचा देला आ साथ ही साथ विचार-तंतु के झनझना देबे के कूबत भी राखेला। बाकिर भोजपुरी गीतकार के उनकर रूप अब तक अदेखा-अलेखा रहल बा। **'नौ'** गीतन के ई संग्रह अचके मे **'चंचल' जी** के एगो दूसर रूप सोझा ले आवत बा जे भोजपुरी गंवई माटी के निगिचा से देखले-सुंघले-सहेजले बा।

संग्रह के अधिकांश कविता गांव-गिरांव से जुड़ल बाड़ी सँ। **'किसान के हुलास,' 'हमार गाँव', 'गाँव-घर', 'गाँव के जिनगी'** जइसन गीतन मे त गांव अपना बहुरंगी छटा मे आइले बा, **'जुग के पुकार', 'बबुआ के नाँव पाती,' 'देसगान'** भा **'चल चलीं श्रमदान करींजा'** में भी गांव के कवनो ना कवनो पक्ष भा ग्रामीण संवेदना मुखरित बिया। **'जुग के पुकार'** मे कवि कहत बा-

आज मिलिजुलि धरती लहलराई जा,

धरती के मटिया में सोनवा उगाई जा।

'बबुआ के नाँव पाती' मे हिमालय, सागर, सुरूज, चान के गोहरावत कवि अंत तक आवत गांव के ठेठ रूपक पर ठिठक जात बा-

'तू अन्हरिया में दियना देखावत रह,

अरुनाचल के भोर भिनुसार हउव।'....

'देसगान' मे गौतम, राना, टीपू, लछमीबाई, गाधी के गोहरावत कवि फेरु अपना गांव के माटी मे ठौर खोजत पहुँचि जात बा-

'रात दिन खेत सोना उगावत रही,

दूध माठा से घर नित पखारा रही,

कांध पर जबले हल हम उठवले रहब,

तबले मंडी भरल ई भंडारा रही,

हमरे भारत के चमकत सितारा रही।'

दरअसल देश के खुशहाली किसान का मेहनत-मशक्कत का बल पर होला। भले ऊ किसान अपना होड़ तोड़ मेहनत के मजिगर फल ना पावे, बाकिर ऊ कर्मयोगी बा, गीता के निष्काम कर्मयोगी।

एह संग्रह के एगो भोजपुरी कविता **'गाजीपुर गुलजार हो गइल'** मे **'चंचल'** जी के चिर परिचित व्यंग्य शैली के दरसन होत बा। गाजीपुर मे कुछ हड़गुड़ान भइल बा। एह अवसर पर ढेर नया-नया चीजु लउके लागल बा-

'जे जिनगी भर बकलोल रहल,

उ पत्रकार बरियार हो गइल.....

अब तक के ई बिसुखल गइया

देख आजु दुधार हो गइल......

गाजीपुर गुलजार हो गइल।'

सग्रह के चार गो कविता गवई जिनगी से अभिन्न रूप से जुडल बाडीस। ई बात सही बा कि **'चंचल' जी** गांव के साफ सुथरा रूप भा शुक्ल पक्ष के ही प्रस्तुत कइले बाड़े। गाव के दुर्दशा, फटेहाली

आ भ्रष्ट राजनीति के सडमेड़ एहिजा नइखे लउकत। हो सकेला कि कवि एह काम के उपन्यासकार, कहानीकार लोग खातिर छोड़ि देले होखे। ईहो हो सकेला कि श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी' से लेके विवेकी राय के 'अमगल हारी' तक एकरा बारे मे पुरहर लिखा चुकल बा। बुझला गीतकार वर्तमान से ओतना खोराक ना लेला जेतना भविष्य के मगल पक्ष से। बात जवन होखे, गाव-गिरांव से जुडल **'चंचल'** जी के इ गीत एगो मोहक-मनोहारी चित्र उरेह ताडे जवन एगो नया आशा, नया संकल्प के शंखनाद करता बा।

'चल चली खेते धनी, छोड़ अब खटिया।'

'खोरी-खेत-खरिहान गुलजार रहेला,
हमरे गँउवाँ में प्रीति-रसधार बहेला।'

आजु जब दुनिया भर मे द्वेष, गलाकाट होड़ आ नफरत के बयार बहि रहल बा, त भारत के गांवन मे जिदा 'प्रीति-रसधार' एगो बड़हन सकून देत बा। जब हर जगह मोल-तोल आ बाजार हावी होखे, ओह माहौल मे गांव में आजुओ—**'बिना तउलले भर-भर लोटा/घर-घर छाँछ बँटाइल'**- एगो अजगूत बात बा जेकरा प गर्व कइल जा सकेला। उमेद बा, एह सग्रह के निजगुत स्वागत होई।

बक्सर (बिहार)
२४ अगस्त, १९९९

● **विजयानंद तिवारी**
सम्पादक 'जगरम'
स्टेशन रोड, कोइरपुरवा,
बक्सर (बिहार)

साधुवाद

भोजपुरी साहित्य मे काफी दिन से काम हो रहल बाय। भोजपुरी साहित्य मे पद्य रचना भरल पड़ल हौ. गद्य मे पिछले तीन दशक से काम शुरु भयल औ अब ले गद्य साहित्य के हर विधा मे बड़ा काम भयल। बाकी पद्य उपेक्षित नइखे।

जिला गाजीपुर निवासी **श्री बृजमोहन श्रीवास्तव 'चंचल'** अइसने रचनाकार बाटन जे बहुत दिन से अपने मउज में कविता लिखत रहलन। अखबारन मे छपे के अलावा रेडियो कार्यक्रम में ओन्हे बराबर अवसर मिलत रहे। इलाहाबाद से केन्द्रीय सेवा से अवकाश ग्रहण कइले के बाद ऊ पुरान रचना के बंडल खोललन त ओमे मात्र नौ ठे भोजपुरी रचना भी मिलल। भोजपुरी से पुरान लगाव होवे के कारन ओह रचनन के सबसे पहिले **'अँजुरी भर आखर'** छपवा के प्रस्तुत कइले बाटन। भोजपुरी प्रेम के लिए **'चंचल' जी** के साधुवाद।

हम समझत हई कि भोजपुरी प्रेमी **'चंचल' जी** के उत्साह के स्वागत करीह।

के. ६७/८६ ईश्वरगगी,
वाराणसी- २२१००१
२६अगस्त, १९९९

● **ईश्वर चन्द्र सिन्हा**
वरिष्ठ पत्रकार
(पूर्व सम्पादक-'आज', 'जनवार्त्ता' आदि)
उपाध्यक्ष - भोजपुरी संसद, वाराणसी

आसीस

'भारत' महान् है–इस महान् देश की उर्वरा वन्दनीया 'धरती' का एक-एक 'कण' महान् है। इस 'महत्ता' के साथ ही सहज 'संस्कार' के कारण उसमे और उसके कण-कण मे असीम 'नि:स्पृहता' भी निहित रही है।

'अति' सर्वत्र वर्जित है, इसका ज्ञान होते हुए भी इस महान् देश की प्रतिभाओ ने उधर ध्यान नही दिया। फलत: उसकी 'महत्ता' स्वय उसी की दृष्टि से ओझल होती चली गई। वह और उसकी महान् सन्तानें 'पराधीनता' के 'पाश' मे जकडती चली गई...लगने लगा कि वह 'नाम-शेष' ही हो जायेगा।

अचानक 'चमत्कार' हुआ। ठोकरो-पर-ठोकरें खाती हुई इस महान् देश की अनेक प्रतिभाओ की 'आत्म-चेतना' जागृत हुई और उन्होने अति 'नि:स्पृहता' के मोह-जाल को विच्छिन्न कर 'आत्म-गौरव' की प्रतिष्ठा के प्रति ध्यान दिया-'ध्यान' ही नही दिया, ऐसे अभूतपूर्व महान् 'सत्याग्रह' का सूत्र-पात किया कि सारा 'विश्व' दङ्ग रह गया। उसकी मिटती हुई 'महत्ता' का पुन: गान होने लगा।

इस 'अल्पज्ञ' सम्पादक को आश्चर्य हुआ कि बहु-मुखी प्रतिभा-शाली आज के कितने ही महान् 'कवि' अभी भी 'नि:स्पृहता' के मिथ्या मोह 'आत्म-गौरव' की उपेक्षा कर रहे है। वे 'भारत महान्' का गान तो कर रहे है, किन्तु अपनी 'महत्ता' के प्रति उदासीन है।

'राष्ट्र-कवि' श्री बृजमोहन श्रीवास्तव 'चञ्चल' जी पिछले पॉच दशको से विविध क्षेत्रो मे अपनी जन्म-जात प्रतिभाओ से इस

महान् देश की, कितने ही प्रकार की, सेवा करते आ रहे है, किन्तु उन सेवाओ के महत्त्व के प्रति जैसा ध्यान देश-वासियो को देना चाहिए था, क्या कोई दे रहा है?

कोई दे भी कैसे! स्वयं **श्री 'चञ्चल' जी** ने ही अपनी सेवाओ के महत्त्व को छिपा रखा है। मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि मेरे अनुरोध को उन्होने ठुकराया नही और अपनी कविताओ का यह प्रथम-'भोजपुरी गीत-संग्रह'–**'अँजुरी भर आखर'**- तत्काल तैयार कर वे इसे तुरन्त प्रकाशित भी करने जा रहे हैं।

मेरी शुभ कामना है कि **'राष्ट्र-कवि' श्री 'चञ्चल' जी** की समस्त रचनाएँ, इसी प्रकार, अनेक संग्रहों के रूप मे शीघ्र ही प्रकाशित होकर लोगो में प्रचारित-प्रसारित हो जिससे उन जैसे महान् कवि की बहु-मुखी प्रतिभा से इस महान् देश की महत्ता की और भी अधिक अनुभूति का सञ्चार विश्व मे हो सके।

चण्डी-धाम
प्रयागराज (उ०प्र०)-२११००६
३१ अगस्त, १९९९

● रमादत्त शुक्ल
सम्पादक
'सम्पादक की वाणी'
(कौल-कल्पतरु चण्डी)

जुग के पुकार !

मिटल गुलामी के गहन अन्हरिया
उगल अजादी के गह-गह अँजोरिया
अइसन सुघर सुअवसर जनि खोवे
आपन भाग सँवार रे किसनवाँ,
जुगवा के इहे बा पुकार रे किसनवाँ।

***

इहे हउवे गंगा-जमुना, इहे ह बधरिया
खेती परधान देस, खेतिए पगरिया
पुरखन के नाँव पर बट्टा ना लागे पावे
आज मिलिजुलि के बिचार रे किसनवाँ,
जुगवा के इहे बा पुकार रे किसनवाँ।

***

सब सुख - संपति लोटे भारत के पईयाँ
एही से कहात रहे सोना के चिरईयाँ
दुनिया के ज्ञान-बोध इहे से मिलल हउवे
कहे इतिहास ललकार रे किसनवाँ,
जुगवा के इहे बा पुकार रे किसनवाँ।

***

पुरखन के आजु धरोहर मिलि गइल
फिर से कमल मुरझाइल खिलि गइल
छोड़ भँगुआइल अब नीनियाँ उचाट तनी
उठ भइल अब भिनुसार रे किसनवाँ,
जुगवा के इहे बा पुकार रे किसनवाँ।

***

आज मिलिजुलि धरती लहलहाईं जा
परती के मटिया मे सोनवा उगाईं जा
धनवा के गँउवाँ पुआर से चिन्हाला
बहल विकास के बयार रे किसनवाँ,
जुगवा के इहे बा पुकार रे किसनवाँ।

***

बबुआ के नाँव पाती !

सँउसे धरती गगन
तोहे पा के मगन
तू चिरंजीव रह
इहे आशीर्वचन
माइ बाबू के किसमिस अनार हउव,
हमरे देसवा के दुरलभ दुलार हउव,
अपने भारत के पावन पियार हउव।

***

तू ही केसर किरन
तू ही चंदन चमन
आज तोह प नेछावर-
बा तीनो भुवन
हमरे मधुबन के तू हरसिंगार हउव,
हमरे देसवा के दुरलभ दुलार हउव,
अपने भारत के पावन पियार हउव।

***

मुँह प सूरज के लव
माथे रजनीश नव
तोहे श्रीपद मिले
इहे आसीस हव
गंगा-जमुना-त्रिवेनी के धार हउव,
हमरे देसवा के दुरलभ दुलार हउव,
अपने भारत के पावन पियार हउव।

***

गोकुल - वृन्दावन
तू ही अमृत - वचन
तू ही राधा - किसन
तू ही तारन - तरन

काशी, मथुरा, अवध, हरिद्वार हउव.
हमरे देसवा के दुरलभ दुलार हउव,
अपने भारत के पावन पियार हउव।

***

धीर बन के रह
बीर बन के रह
देस के आन पर
तीर बन के रह
चिर हिमालय के चमकत लिलार हउव,
हमरे देसवा के दुरलभ दुलार हउव,
अपने भारत के पावन पियार हउव।

***

कल्प तरुवर सुमन
तू ही सरबस सपन
तू ही नव जागरन
तू ही भारत रतन
छीर सागर के उज्जर जुआर हउव,
हमरे देसवा के दुरलभ दुलार हउव.
अपने भारत के पावन पियार हउव।

***

श्रुति सुनावत रह
बिधि बतावत रह
तू अन्हरिया मे
दियना दिखावत रह
अरुनाचल के भोर भिनुसार हउव,
हमरे देसवा के दुरलभ दुलार हउव,
अपने भारत के पावन पियार हउव।

***

देसगान !

देस पुरखन के थाती मिलल हव हमे
प्रान जस ई धरोहर दुलारा रही
ई सहेजल रही, ई सँवारल रही
प्रानपन से ई भारत पियारा रही,
हमरे भारत के चमकत सितारा रही।

***

हिन्द के हमरे आदर्श जय-हिन्द हव
भावना से भरल इहे नारा रही
रोज फूलत-फलत अउर पनपत रही
जबले गंगा आ जमुना मे धारा रही,
हमरे भारत के चमकत सितारा रही।

***

जबले घाटी ई कुमकुम से गमकत रही
फूल कचनार केसर कुँवारा रही
सोनचिरई कियारिन मे फुदकत रही
तबले कश्मीर जुग-जुग हमारा रही,
हमरे भारत के चमकत सितारा रही।

***

गीत - गोविंद, बानी गुरुग्रंथ के
स्वर्ण - मंदिर रही, गुरुद्वारा रही
जबले पाँचों नदी, भांगड़ा - नृत्य हव
तबले पंजाब पावन पियारा रही,
हमरे भारत के चमकत सितारा रही।

***

त्रिपुरा, मिजोरम, चेरापूँजी सभे
नाच बीहू के जबले नजारा रही
माइ कौरु - कमख्या के आसीस से
ई असम शान्ति के पिटारा रही,
हमरे भारत के चमकत सितारा रही।

***

अँजुरी भर आखर

माइ काली, पुरी, देवी पाटन इहाँ
काशी, मथुरा आ संगम-त्रिधारा रही
चाँदनी जबले चूमत रही ताज के
तबले रेहल प पूजल सिपारा रही,
हमरे भारत के चमकत सितारा रही।

***

देस राना के हव, देस टीपू के हव
लछमीबाई, रजिया आ दारा रही
हम पखेरू सभे एक ही डार के
एक पनघट रही, एक इनारा रही,
हमरे भारत के चमकत सितारा रही।

***

देस गौतम के हव, देस गाँधी के हव
विश्व मे शान्ति के ई नगारा रही
जबले गीताजली ज्ञान-गीता रही
तबले एकमत रही भाईचारा रही,
हमरे भारत के चमकत सितारा रही।

***

रात - दिन खेत सोना उगावत रही
दूध माठा से घर नित पखारा रही
काँध पर जबले हल हम उठवले रहब
तबले मडी भरल ई भँडारा रही,
हमरे भारत के चमकत सितारा रही।

***

आरती हम उतारत रहब देस के
राष्ट्र पुतली रही, नयन तारा रही
ई हिमालय निहारत रही दस दिसा
हिन्द सागर के गरजत किनारा रही,
हमरे भारत के चमकत सितारा रही।

***

चल चलीं श्रमदान करींजा

पेरिस अइसन सड़क बना दीं
लंदन जइसन गलियन के
गाँव - गाँव मे कचरकूट बा
हरियर छीमी फलियन के
बीत गइल खरवॉस, चाव से-
घुघुनी चल नेवान करीजा,
चल चलीं श्रमदान करींजा।

***

गड़हा - गुड़ही पाट - पूट के
साफ करीजा नाली
बहुत परल बा दुकानन भिरि
पुरवा - पत्तल खाली
एहू बहाने ए जाड़ा मे
लक्स लगा स्नान करीजा,
चल चली श्रमदान करीजा।

***

ई त जनता के सेवा ह
अब कुछ टहल महान करीजा
ई जुग ह सेवा के भइया
सबकर मिलि कल्यान करीजा
बडे-बड़े सौखीनन के
चल साफ आज पिकदान करीजा,
चल चली श्रमदान करीजा।

***

घर-घर गाँव-गाँव मे जाके
मूढन के समझाई बुझा के
उनसे काम धकाधक लेई
अपने ओवर कोट लगा के
घात लगे त शुद्ध घीव के
हलुवा के जलपान करीजा,
चल चली श्रमदान करीजा।

***

अब ना अइसन बाजा बाजी
सब मे लागी हाँका-बाजी
चाहे उ अफसर हो भइया
पंडित हो या मुल्ला, काज़ी
जे - जे जान चोरावत लउके
गरम ओहि के कान करीजा,
चल चली श्रमदान करीजा।

***

गाजीपुर गुलजार हो गइल

जाड़ा बीतल रितु मस्ताइल
नाहक मन सबकर बउराइल
ई मंद मूरत महजिद बयार
उनचास पवन के मार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

हर रोज नई अफ़वाह उडल
बेमतलब के सनसनी बढ़ल
सुनत - सुनत ई झूठ-साँच
बहुतन के दरद - बोखार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

अब तक जे ना कलम धइल
ओहू के जिनगी सफल भइल
जे जिनगी भर बकलोल रहल
उ पत्रकार बरियार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

कल तक फिरत रहे जे छूँछे
जेकर केहू बात ना पूँछे
अब तक के ई बिसुखल गइया
देख आजु दुधार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

अखबारन के बात जनि पर
हिरद से नागयन बूझ
'चिनगारी' से ज्वाला निकलल
भसम 'आज' 'संसार' हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

सुनके कानाफूसी 'चचल'
मचल सनसनी अउरो हलचल
छन में देख अरे । बाप रे
पुलिसन के भरमार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

गरमा-गरम त कहीं सुनाइल
केहू ताजा-बासी चिल्लाइल
अब सभे पगइल जिला छोडि
जब तनिक सजग सरकार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

एक सौ चउवालिस लागल जब
नेतागीरी से भागल सब
सीखचन मे जब बन्द भये कुछ
छूमतर व्यापार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

गाजीपुर गुलजार हो गइ

जाडा बीतल रितु मस्ताइल
नाहक मन सबकर बउराइल
ई मंद सूरत महजिद बयार
उनचास पवन के मार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

हर रोज नई अफवाह उडल
बेमतलब के सनसनी बढ़ल
सुनत - सुनत ई झूठ-साँच
बहुतन के दरद - बोखार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

अब तक जे ना कलम धइल
ओहू के जिनगी सफल भइल
जे जिनगी भर बकलोल रहल
उ पत्रकार बरियार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

कल तक फिरत रहे जे छूँछे
जेकर केहू बात ना पूँछे
अब तक के ई बिसुखल गइया
देख आजु दुधार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

अखबारन के बात जनि पूछ
हिरदे से नागयन बृक्ष
'चिनगारी' से ज्वाला निकलल
भसम 'आज' 'ससाग' हा गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

सुनके कानाफूसी 'चंचल'
मचल सनसनी अउरो हलचल
छन में देख अरे । बाप रे
पुलिसन के भरमार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

गरमा-गरम त कहीं सुनाइल
केहू ताजा-बार्मा चिल्लाइल
अब सभे पगइल जिला छोड़ि
जब तनिक सजग सरकार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

एक सौ चउवालिस लागल जब
नेतागीरी से भागल सब
सीखचन मे जब बन्द भये कुछ
छूमतर व्यापार हो गइल,
गाजीपुर गुलजार हो गइल।

***

किसान के हुलास !

चल चली खेते धनी, छोड़ अब खटिया,
चइत के महीना आइल, लागि गइल कटिया।

***

कहिए से कहत बाड़ू, गहना बनाय द
मेलवा में जाए खातिर चुनरी रंगाय द
हो सके त केरा के सलूकवो सियाय द
इहे बाटे साध, एक बेरि त बुताय द
चल असो मालिक हँउवें, पूरा होइ हठिया
चल चली खेत धनी, छोड़ अब खटिया,
चइत के महीना आइल, लागि गइल कटिया।

***

रहरी के डाँठ देख कस अठिलात बा
गेहुँआ के बाल, धीरे-धीरे पियरात बा
निरखि गभिन खेत, जियरा जुड़ात बा
एही का त बूता पर, एतना कहात बा
आनमान जीव कर, बीतल दुख रतिया
चल चली खेते धनी, छोड अब खटिया,
चइत के महीना आइल, लागि गइल कटिया।

***

फगुआ से मातल जब बहेले बयरिया
रुनभुन - रुनभुन बाजे ले लतरिया
तिसिया के देख बिहँसति बा कतरिया
गह-गह लउकेला बाबा वाली परिया
बेवत कइल चरबन के, ले ली हम लाठिया
चल चली खेते धनी, छोड़ अब खटिया,
चइत के महीना आइल, लागि गइल कटिया।

***

हमार गाँव !

छिछिल नहर, ताल उतराइल
उमड़ल छोटकी नाली
रोपनी, सोहनी, पटवन बीतल
फूटल अन्न के बाली

*

लागे हरियर सीवान
जइसे परवल के पान
खरहा खेले कबड्डी
बगुला डूबे उतरान

**

हमरे गँउवाँ मे लहरा बहार रहेला,
हमरे गँउवाँ मे प्रीति-रसधार बहेला।

***

छवर-छवर महुआ गदराइल
आम टिकोरा झूमे
लदफँद डाली, हवा निगोड़ी
दउर - दउर के चूमे

*

चुवे महुआ के डार
गम-गम गमके बधार
कोइल कुहुके अकेल
पपिहा पिहके भिनसार

**

हमरे बगिया मे मोर किलकार करेला,
हमरे गँउवाँ मे प्रीति-रसधार बहेला।

***

चना-चबेना गुड़ के भेली
खलवा इनार के पानी
दिन-दुपहरिया टोपरा-टोपरा
करीं फसल निगरानी

*

लागलि कटिया सीवान
बोझा छुवे आसमान
परजा - पवनी अघाइल
सोना उगिले खरिहान

**

हमरे खेतवा हमार भंडार भरेला,
हमरे गँउवाँ मे प्रीति-रसधार बहेला।

***

घर-आँगन मे गोबरी कइके
अरघा-कलस धराइल
चारो ओर पल्लव के भँवरी
दुरदिन दूर पराइल

*

कभी पछुवा बयार
कभी पुरवा के धार
सूप मारेला हिलोर
दाना उछिले हजार

**

खोरी-खेत-खरिहान गुलजार रहेला,
हमरे गँउवाँ मे प्रीति-रसधार बहेला।

***

अपने जोते अपने बोवे
अपने करे किसानी
तब जाके भंडार भरेली
अन्नपूरना कल्यानी

*

सोना-चानी के भार
मूंगा-मोती के हार
सुवापरी लहराय
पाँव थिरके हजार

**

हमरे बस्ती मे सोरहो सिंगार झरेला,
हमरे गँउवाँ मे प्रीति-रसधार बहेला।

***

गोरस-दही निखालिस मठ्ठा
घी-लयनू उतराइल
बिना तउलले भर-भर लोटा
घर-घर छाँछ बँटाइल

*

गन्ना दुवरा पेराय
लड्डू गोद के बन्हाय
लस्सी जियरा जुड़ावे
गुड घीव मे नहाय

**

हमरे अँगना मे नित जेवनार रहेला,
हमरे गँउवाँ मे प्रीति-रसधार बहेला।

***

गाँव-घर !

नदी किनारे गॉव बसंती
गोइडे महुआबारी
पोखर डूबे, नहर लबालब
खेत भइल सुखकारी

*

कही कजरी के शान
कही बिरहा के तान
बाबा गावें रमैनी
सुगना उचरे गियान·

**

अपना बखरी मे बिरहा-बिहार करिला,
अपना गँउवाँ के एही से दुलार करिला।

***

सावन-भादो जेठ दुपहरी
पाला हो या पानी
सालो भर दरसन देवेली
अन्नपूरना वरदानी

*

कही खेत खरिहान
कही कपिला बथान
शंख बाजे सिवाला
महजिद पठवे अजान

**

अपना बखरी मे पीठा-पियार करिला,
अपना गॅउवॉ के एही से दुलार करिला।

***

पिअरी माटी भीति पोताइल
घर-आँगन में गोबरी
बाबा दसरथ राम पिताश्री
मइया घर के सेवरी

*

कही माठा महाय
कही चिउरा कुटाय
गुल्ली डंडा, ओल्हा पाती
कही होरहा भुजाय

**

अपना बखरी मे सोरहो-सिंगार करिला,
अपना गँउवाँ के एही से दुलार करिला।

***

तुलसी चउरा तुलसी पोथी
माथा सबहि झुकावे
'मंगल-भवन अमंगल हारी'
आठो पहर सुनावें

*

कही तीज तिउहार
कही मंगल मलार
कही कीरतन, कउवाली
बाजे झाल, करतार

**

अपना बखरी मे छठ-छठियार करिला,
अपना गँउवाँ के एही से दुलार करिला।

***

गाँव के जिनगी !

गाँव-गाँव मे नहर नरबदा
हर खेतन में नारी
हरियर-हरियर भुई मखमली
झूमें केसर-क्यारी

*

बिजुरी चमके दुवार
झरे रस के फुहार
बाबा गावे चनैनी
मइया गुनवे मलार

**

मूंगा-मोती उगाय के कोठार भरिला,
अपना गोकुल मे बिरहा-बिहार करिला।

***

सरला सावन, भगला भादो
अगहन-पूस महीना
कीचड़, काँदो, काई बीचे
कड़के अरक पसीना

*

गल्ला एतना उगाई,
साधू-पीर के जुड़ाई
कैदी, सेना, गिफियूर्जी
मॅउसे देस के खियाई

**

अपना पुरखन के नाँव उजियार करिला,
अपना गोकुल मे वृंदा-बिहार करिला।

***

टोला - टोला बिछल खड़ंजा
खोरी - खोरी बिजुरी
जगमग-जगमग बस्ती लागे
इंद्रपुरी भई बखरी

*

कही प्रौढ़-पाठशाला
कही पंच बटोराला
दुआ फूँकें नमाजी
भसम बाँटे सिवाला

**

एके कुंइयाँ के नीर सवीकार करिला,
अपना गोकुल मे अमृत-बिहार करिला।

***

ढाई आखर गाँठ बाँधि सब
जोते-बोवें-काटे
कार-परोजन, हँसी-खुशी में
घर-घर नेवता बाँटे

*

कही बाजे शहनाई
कही बिटिया बिदाई
चद्दर चढ़ेला चढ़ावा
होली-ईद सुखदाई

**

मीठी सेवई सप्रीति जेवनार करिला,
अपना गोकुल मे मंगल-बिहार करिला।

***



कवि • बृजमोहन श्रीवास्तव 'चंचल'

जानकारी !

• **जनम**–गाँव अउर डाकघर–बारा, तहसील–जमानियाँ, जिला–गाजीपुर, उत्तर प्रदेश मे सनद का मोताबिक १६ जनवरी, १९३६। बाबूजी बतवले 13 दिसम्बर, १९३३ मे भुईंडोल आइल रहे।

• **रचना**–कविता के समहुत सन् १९५१ से/विधा भोजपुरी, गम्भीर–भाव अउर हास्य–व्यग्य/विशेष ख्याति शिष्ट शैली के हास्य–व्यंग्य में/प्रकाशित होइ भोजपुरी, गम्भीर–भाव अउर हास्य–व्यंग्य के अलग–अलग तीन किताब।

• **सेवा**–अध्यापन, पत्रकार/संवाददाता–परिवर्तन, आज, सन्मार्ग, बनारस, हलचल आदि/विशेष प्रतिनिधि–'सन्मार्ग', विधान सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ में/राज्य सरकार, उत्तर प्रदेश के कई पद पर/केन्द्रीय सरकार के पुनर्वास मंत्रालय में निरीक्षक पद पर/भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के अधीन कार्यालय मुख्य नियंत्रक रक्षा लेखा (पेन्शन), इलाहाबाद में वरिष्ठ लेखा परीक्षक के पद से ३१ जनवरी, १९९४ के बाद से पेन्शन पर।

• **विविध**–दूरदर्शन केन्द्र लखनऊ आ दिल्ली से/आकाशवाणी के कई केन्द्र से/ढेर पत्र–पत्रिका में/देस–विदेस अउर कई राज्य के अलग–अलग जनपद, नगर, गाँव, दफ्तर आदि–आदि के कवि सम्मेलन अउर मुशायरा में खूबे प्रसारित–प्रचारित/ढेर सा दुलार अउर सम्मान मिलल। केतना गिनाईं। बस।

• **एह समय**–२–ढिंगवस कोठी, अलोपीबाग, इलाहाबाद–६ (पिन–२११००६), उत्तर प्रदेश, फोन (०५३२) ५०३७४५